# CONTENTS

## INDEX


| TITLE | Page(s) |
|---|---|
| EMPOWERMENT OF WOMEN TEACHERS IN RELATION TO THEIR FAMILY ADJUSTMENT - **Prof. Dr. T. VIMALA** | **02** |
| ANALYSING THE COMPLICATEDNESS OF CHARACTERS IN GOTHIC LITERATURE - **Rishika Singh** | **11** |
| A STUDY ON AWARENESS OF LIFE SKILLS EDUCATION AMONG ADOLESCENT STUDENTS IN TELANGANA STATE - **Anuradha Seelamu, Dr. Shilpi Srivastava** | **16** |
| IMPORTANCE OF NEP 2020 & OPPORTUNITIES OF B.Ed STUDENT TEACHERS FROM COLLEGES OF EDUCATION - **Dr. A. SURESH JOHN KENNEDY** | **21** |
| वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा में नवाचार की भूमिका - धर्मवीर सिंह, याशी उपाध्याय | **27** |


DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

DVS International Journal of Multi-Disciplinary Research ISSN NO 2454-7522
Vol: 8, ISSUE: 3, No: 31 January – March, 2023

# वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा में नवाचार की भूमिका

*धर्मवीर सिंह
* सहायक आचार्य,
दीवान इंस्टीटयूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज,
मेरठ

** याशी उपाध्याय
** सहायक आचार्या
कनोहर लाल महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
मेरठ

## सारांश

आज का युग अनुसंधान और नवाचार का युग है। शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए अनुसंधान और नवाचार महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक शिक्षक द्वारा शिक्षा को रूचिकर, सरल, उपयोगी, क्रियात्मक, व्यावहारिक, रचनात्मक एवं प्रासंगिक बनाना नवाचार के द्वारा ही संभाव हो सकता है। नवाचार एक ऐसा नया विचार जो शिक्षक को अपनी कार्यप्रणाली, विचारों एवं व्यवहार में बदलाव के लिए प्रेरित करता है। आधुनिक युग विज्ञान, तकनीकी एवं अनुसंधान का युग है, जिसमें एक शिक्षक को बच्चों के बहुमुखी, गुणवत्तापूर्ण, सर्वोत्तम एवं सर्वागीण विकास के लिए शिक्षा पद्धति में नवाचार की आवश्यकता है। शिक्षा पद्धति में शिक्षक नवाचार की धुरी होता है और वह नवाचार के द्वारा ही बच्चों में सकारात्मक विकास, नैतिक मूल्यों एवं आदर्शा का विकास कर सकता है। नवाचार के द्वारा ही शिक्षक अपने शिक्षण में नवीन शिक्षण विधियों एवं पढ़ाने के तरीके में परिवर्तन करके बच्चों को उनके कौशल एवं प्रतिभा से अवगत करा सकते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी शिक्षकों को अधिक से अधिक सीपीडी कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए कहा गया है। शिक्षक के लिए नवाचार ही एक ऐसा उपाय है जिसके द्वारा वह वर्तमान परिवेश के अनुरूप अपने आप को ढाल सकता है। आधुनिक युग में देश को कुशल एवं अच्छे शिक्षकों की आवश्यकता है जो नवाचार के अपनाने से ही संभव है।

**मुख्य शब्द** : नवाचार, शिक्षक, शिक्षक शिक्षा, सीपीडी, रचनात्मक और सर्वागीण विकास आदि ।

## प्रस्तावना

समय के अनुसार समाज हमेशा परिवर्तनशील रहता है, जैसे-जैसे समाज में परिवर्तन होगा उसी के अनुरूप शिक्षा के उद्देश्यों में भी परिवर्तन होना सुनिश्चित है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम है और शिक्षा में परिवर्तन तभी होगा जब शिक्षक स्वयं को समय की मांग के अनुसार परिवर्तित करे, जो नवाचार व अनुसंधान से ही संभव हो सकता है। जैसा की शब्द से ही ज्ञात होता है कि नवाचार का मतलब किसी नये परिवर्तन से है जिसमें दो शब्दों - नव + आचार आते है। जिसमें नव शब्द का अर्थ नवीकरण से है और आचार शब्द का अर्थ व्यवहार या शिष्टाचार से होता है। अर्थात नवाचार का मतलब नवीकरण से है जिसमें नई-नई चीजों, नई-नई युक्तियों, नए-नए अविष्कारों या कहें आधुनिकरण को अपनाने से होता है। नवाचार के अन्तर्गत किसी प्रक्रिया, उत्पाद या सेवा में कम या ज्यादा परिवर्तन लाने से है। नवाचार को अर्थतंत्र का सारथी कहा गया है। यह मात्र प्रक्रिया ही नही, परिणाम भी है। नवाचार में कुछ उपयोगी तथा नये तरीके अपनाये जाते है जैसे-नयी विधि, नयी कार्य -पद्धति, नयी तकनीकी व नया उत्पाद आदि। शिक्षक के कन्धों पर राष्ट्र के निर्माण का भार होता हैं और वह बच्चों को परिवार, समाज व राष्ट्र का एक जिम्मेदार नागरिक बनाता है। इसिलिए शिक्षक को अधिक नवाचारी, खोजी, क्रियाशील, प्रभावपूर्ण, साधन सम्पन्न प्रतिबद्ध और दक्ष होना चाहिए। किसी भी संस्था को नवाचार के द्वारा उत्पादकता, दक्षता, गुणवत्ता एवं बाजार में पकड आदि को मजबूत किया जाता सकता है। जो संस्थाऐं समय की मांग के अनुसार नवाचार को नही अपनाती वे समाप्त हो जाती है तथा उनका स्थान नवाचार को अपनाने वाली अन्य संस्थाऐं प्राप्त कर लेती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी कहा गया है कि शिक्षक को खुद में सुधार करने के लिए और अपने पेशे से संबंधित आधुनिक विचार और नवाचार को सीखने के लिए सतत् अवसर दिये जाने चाहिए। साथ ही साथ यह भी कहा कि प्रत्येक शिक्षक को स्वयं के व्यावसायिक विकास के लिए स्वेच्छा से प्रत्येक वर्ष लगभग 50 घंटों के सीपीडी कार्यक्रम में हिस्सा लें। सीपीडी में विशेष रूप से बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान के नवीनतम शिक्षणशास्त्र, अधिगम परिणामों के रचनात्मक और अनुकूल आकलन,

योग्यता आधारित अधिगम और संबंधित शिक्षणशास्त्र जैसे अनुभवात्मक शिक्षण, कला-एकीकृत, खेल-एकीकृत तथा कहानी-आधारित दृष्टिकोण आदि को क्रमबद्व रूप से शामिल किया जाये। उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे शिक्षकों की पहचान की जानी चाहिए और उन्हें पदोन्नति और वेतन वृद्धि दी जानी चाहिए, जिससे कि सभी शिक्षकों को अपना बेहतरीन कार्य करने के लिए प्रोत्साहन मिले। प्रस्तुत पेपर वर्तमान परिपेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा में नवाचार की भूमिका के बारे में बताता है। उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों के नवाचार को प्राथमिकता दी गयी है। वर्तमान शैक्षिक परिस्थितियों में सुधार लाने के लिए शिक्षक शिक्षा में नवाचार का प्रयोग समय की मांग है।

## शिक्षक शिक्षा में नवाचार

प्राचीन काल से ही हमारे भारतवर्ष में शिक्षक को देवतुल्य माना गया है, ऐसे में एक बालक के प्रति उसकी भूमिका अति महत्वपूर्ण हो जाती है। शिक्षक पर ही बालक के सतत् एवं सर्वांगीण विकास का दायित्व होता है और यह दायित्व तब पुरा होगा जब शिक्षक के पास पूर्ण ज्ञान, नवाचार एवं परिस्थितियों के साथ खुद को बदलने की योग्यता हो। यह सत्य है कि प्रकृति का नियम है परिवर्तन, जो सफल जीवन के लिए आवश्यक होता है तथा जब परिवर्तन होता है तो नये-नये विचारों का उदय होता है। शिक्षा भी परिवर्तन से अछूती नही रहती तथा परिणाम स्वरूप वर्तमान काल में देश और समाज की आवश्यकताओं के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा के संपूर्ण स्वरूप में ही परिवर्तन होता जा रहा है। वर्तमान में शिक्षक शिक्षा के विकास के लिए अनेक ऐसे मुद्दे है, जिनके विकास हेतु शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में आवश्यक सुधार की आवश्यकता है। चूंकि समाज परिवर्तनशील है ऐसी परिस्थति में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम, शिक्षक शिक्षण, एकीकृत एवं समावेशी शिक्षण, एवं शिक्षण पाठ्यक्रम आदि में समय-समय पर नवीन परिवर्तन की आवश्यकता होती है। शिक्षको को नवीन ज्ञान, नवीन तकनीकी अनुसंधान का ज्ञान, शिक्षण कौशलो में दक्षता, व नवाचार के ज्ञान एवं इनके व्यवहारिक प्रयोग में दक्ष होना अति आवश्यक है। शिक्षक को भी छात्रों के साथ परस्पर संबंध स्थापित करने के लिए नवाचार एवं नये-नये शैक्षिक तकनीको की जानकारी होना आवश्यक है। इंटरनेट, संप्रेषण

तकनीकी, मल्टीमिडिया, दूरदर्शन पर प्रसारित शैक्षिक प्रोग्राम एवं नयी-नयी प्रौद्योगिकी ने तो वर्तमान युग में शैक्षिक क्षमता में वृद्धि की है। नवाचार को अपनाकर ही एक शिक्षक पाठ्यक्रम को रोचक तथा ज्ञानवर्धक बनाता है।

हमारे देश में शिक्षक शिक्षा में नवाचार लाने के उद्देश्य से ही "राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् अधिनियम-2014" शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम से संबन्धित तरह-तरह के कार्यक्रम के द्वारा कुछ महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली परिवर्तन किये गये है। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में स्नातक स्तर पर बी.एड की एक वर्षीय पाठ्यक्रम को बढ़ाकर द्विवर्षीय बी.एड., शिक्षा में मास्टर डिग्री द्विवर्षीय एम.एड, शारीरिक शिक्षा स्नातक द्विवर्षीय बीपीएड, शारीरिक शिक्षा में द्विवर्षीय एम.पी.एड. तथा तीन वर्षीय एकीकृत बी.एड-एम.एड. माध्यमिक शिक्षक शिक्षा का चार वर्षीय एकीकृत कार्यक्रम बी.ए-बी.एड., बी.एससी- बी.एड. एवं बी.एल.एड पाठ्यक्रम आदि परिवर्तन हुए हैं। अन्य परिवर्तनों में माध्यमिक शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम, गांधी विद्यापीठ, प्रारंभिक शिक्षक शिक्षा का चार वर्षीय एकीकृत कार्यक्रम, (बी.एल.एड.), दिल्ली विश्वविद्यालय व गतिविधि आधारित माध्यमिक शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम, इंदौर व एनसीईआरटी के आरईएस में माध्यमिक शिक्षक शिक्षा का दो वर्षीय विस्तारित कार्यक्रम आदि शामिल है। शिक्षक शिक्षा में नवाचारों के रूप में सूक्ष्म शिक्षण, अनुकरणीय शिक्षण, विभिन्न शिक्षण कौशल, कला एवं सौन्दर्य, पाठ्यक्रम में शिक्षण शैली अधिगम का मूल्यांकन, आई0सी0टी0, कम्प्यूटर शिक्षा, सामुदायिक सहभागिता, वनशाला कार्यक्रम, सामुदायिक सेवाएँ, खण्ड शिक्षण, स्वाध्याय पर आधारित अभ्यास कार्यक्रम आदि को शामिल है। सैद्धान्तिक पक्ष में भाषा ज्ञान, रोल प्ले, कला, पाठय-वस्तु अध्ययन, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद-विवाद, पैनल चर्चा, योग शिक्षा व स्वास्थ्य संबंधी क्रियाएँ जैसी नवाचार आधारित क्रियाओं को शामिल किया गया है।

शिक्षक शिक्षा में नवाचार का उपयोग करने से व्यक्ति को यह जानकारी होती है कि क्या, कब और कैसे सीखाना है तथा कब, क्यों और कैसे सीखना हैं। इससे शिक्षक को मूल्यांकन हेतु खोज एवं नवीन उपकरणों की जानकारी होती है तथा नवाचार को अपनाने वाला शिक्षक शिक्षण संबंधी समस्याओं का समाधान करते है।

यह सत्य है कि एक शिक्षक को सीखाने के साथ-साथ स्वयं सीखना भी अति आवश्यक है। शिक्षक नवाचारों के ज्ञान द्वारा अपनी कक्षा के वातावरण को अधिक ज्ञानवर्धक और सक्रिय बनाये रखता है। शिक्षक शिक्षा में नवाचार के उपयोग से शैक्षिक समस्याओं का हल होता है तथा कक्षा के समस्त विद्यार्थियों पर व्यक्तिगत रूप से प्रयोग करके शिक्षण को रूचिकर एवं बोधगम्य बनाया जा सकता है। सभी शिक्षक नवाचार के प्रयोग से ऐसी प्रभावपूर्ण अधिगम परिस्थितियों का निर्माण व प्रयोग करते हैं जिसमें करके सीखने, अभ्यास द्वारा सीखने एवं प्रत्यक्ष अनुभवों को ग्रहण करने का अवसर प्राप्त होते हैं। नवाचारों के द्वारा शिक्षक अधिकाधिक ज्ञानेन्द्रियों को सक्रिय रखते है जिससे कक्षा-कक्ष में प्रजातांत्रिक वातावरण होता है। आधुनिक युग नवाचार एवं अनुसंधान का युग है जो भी शिक्षक समय के अनुसार खुद को परिवर्तित करेगा वही अच्छा शिक्षक कहलायेगा और सभी को भविष्य की संभावनाओं तथा प्रतिस्पर्द्धा में सफलता प्राप्त करने के लिए निरन्तर प्रयास करने होगें।

## नवाचार के प्रकार

किसी भी संस्था में सफल नवाचार तब होता है जब मूल्य श्रृंखला में तकनीकी और उत्पाद या प्रक्रिया नवाचार प्रभावी संरचना एवं रणनीति नवाचार के माध्यम से लागू किए जाते हैं। किसी भी संस्था में नवाचार, जिसमें लोगों, नेतृत्व, रचनात्मकता, प्रक्रिया, और संगठनात्मक संस्कृति शामिल है, अधिक लाभ प्राप्त करने और बाजार में सफल होने के लिए बढ़ने वाला चालक है। नवाचार को व्यवस्थित तरीके से संपर्क किया जाना चाहिए, न कि टुकड़े टुकड़े में। नवाचार के कुछ निम्नलिखित प्रकार है-

- सेवा नवाचार
- व्यापार मॉडल नवाचार
- तकनीकी नवाचार
- सामाजिक नवाचार
- अभिकल्प (डिजाइन) नवाचार

## शिक्षक शिक्षा में नवाचार की आवश्यकता

दर्शन शास्त्र समय-समय पर हमें यह बताता है समाज मे अब बदलाव की आवश्यकता है और यह बदलाव केवल शिक्षा के द्वारा ही संभव है, जिसे एक शिक्षक लाता है। यदि शिक्षक समय के अनुसार खुद में अथवा अपने पढाने के तरीकों में परिवर्तन न करे तो समाज में सही रूप में बदलाव नही आयेगा और सृष्टि समाप्ति की ओर चली जायेगी। क्योकि शिक्षक ही समाज का वो हिस्सा है जो शिक्षा के माध्यम से बदलाव का कारक है। शिक्षक और स्कूल दोनों ही अपने परिवेश से प्रभाव ग्रहण करते हैं तथा प्रभावी शिक्षक प्रशिक्षण ही स्कूली शिक्षा में गुणवत्ता को सुनिश्चित करता है। एक शिक्षक ही शिक्षा के बृहत्तर संदर्भों में कार्य करता है जैसे- पाठ्यक्रम का उद्देश्य, शिक्षण कौशल, पाठ्य सामग्री, नितियाँ, शिक्षण विधियाँ आदि। एक शिक्षक को केवल शिक्षण विधियों का ज्ञान ही नहीं बल्कि बाल मनोविज्ञान, व्यैक्तिक विभिन्नता, व्यक्तित्व, अधिगम, बालक के सामाजिक-आर्थिक परिवेश तथा सीखने की प्रक्रिया का ज्ञान होना चाहिए। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 ने भी शिक्षकों की योग्यता एवं क्षमता संवर्द्धन और गुणवत्ता में विकास के लिए शिक्षक शिक्षा में नवाचार की आवश्यकता महसूस की है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी शिक्षक को खुद में सुधार करने के लिए और अपने पेशे से संबंधित आधुनिक विचार और नवाचार को सीखने के लिए कहा गया है। शिक्षक शिक्षा में नवाचार की आवश्यकता को निम्नलिखित संदर्भों में देखा जा सकता है-

1. अनुसंधान एवं वैज्ञानिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए।
2. शिक्षक शिक्षा के सतत् व व्यापक एवं गुणात्मक विकास हेतु।
3. शिक्षक शिक्षा को तकनीकी युक्त बनाने एवं समय सापेक्ष बदलाव लाने हेतु।
4. शिक्षक शिक्षा में आई.सी.टी0 एवं शिक्षण दक्षता के विकास हेतु ।
5. शिक्षण के उद्देश्य, पाठयवस्तु एवं पाठ्यचर्या में नूतन विषय सामग्री के विकास हेतु।

6. छात्राध्यापकों को क्रियाशील बनाने तथा प्रत्यक्ष एवं स्थायी ज्ञान प्रदान करने योग्य बनाने हेतु ।

7. शिक्षा के प्रति सभी शिक्षक शिक्षा संस्थानों एवं विद्यालय में समन्वय स्थापित करने के लिए।

8. शिक्षण कौशलों, शिक्षण सहायक सामग्रियों व विधियों में नवीनता लाने हेतु।

9. देश व सामाजिक आकांक्षाओं एवं अपेक्षाओं की पूर्ति हेतु ।

## शिक्षक शिक्षा में नवाचार का महत्त्व

नवाचार शिक्षक को अपने काम के प्रति खोजी, रचनात्मक, जिम्मेदार, ठोस एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाने में सहायता प्रदान करता है। इसके उपयोग द्वारा शिक्षक बालक को आसान, करके सीखना, आनंदमयी एवं रूचिकर रूप से सीखा सकता है। नवाचार के माध्यम से शिक्षक का शैक्षिक पुररुत्थान संभव हो सकता है। नवाचार के द्वारा ही शिक्षक स्वयं क्रियाशील, सृजनशील एवं अध्ययनशील बने रहते हैं। आधुनिक युग में नवाचार के माध्यम से शिक्षक परम्परागत शैक्षिक जड़ता को तोड़ते हुए नवीन दक्षताओं, तकनीकी, शिक्षण विधियों एवं शिक्षण कौशलों को विकसित कर सकता है। नवाचार के द्वारा शिक्षक बाल केन्द्रित, खेलकूद, सांस्कृतिक व सामाजिक गतिविधियों का सफल आयोजन कर सकता है। नवाचार के उपयोग से शिक्षक सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा को समझ सकेंगे। जब सभी लोग कोविड-19 के डर से घर के अन्दर बैठे हुए थे तब नवाचार के माध्यम से ही शिक्षण कार्य संभव हो सका। नवाचार शिक्षकों को शिक्षण में प्रायोगिक एवं व्यावहारिक कार्यों के संपादन को सीखाता है। शिक्षक नवाचार के माध्यम से देश, समाज, प्राकृतिक एवं विद्यालय के मौजूदा संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग कर सकते हैं।

## शैक्षिक निहितार्थ

आज का युग तकनीकी का युग है और शिक्षा के क्षेत्र में भी तकनीकी एवं नवाचार के उपयोग से शैक्षणिक व्यवस्था और कार्यप्रणाली को जीवन्त बनाये रखा

जा सकता है। नवाचार के अभाव में शैक्षिक उद्देश्यों और प्रक्रिया में व्यापक अंतर हो सकता है। नवाचार के उपयोग से गुणात्मक उन्नयन होता और देश, समाज, शिक्षक एवं शिक्षार्थियों का उज्जवल भविष्य दिखायी पडता है, जिससे शिक्षा को दिशा मिलती है और मनुष्य, समाज तथा राष्ट्र की प्रगति के मार्ग खुलते हैं। आज प्रतिस्पर्धा एवं विज्ञान का युग है और ऐसी परिस्थति में शिक्षक शिक्षण, शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम, एकीकृत शिक्षण, एवं शिक्षण पाठ्यक्रम में नवीन परिवर्तन की आवश्यकता है।

शिक्षक शिक्षा में नवाचार के प्रयोग से शिक्षक एवं छात्राध्यापक कॉन्सेप्ट मैपिंग, अभिनव शिक्षण, तकनीकी, खेल, चित्रकथा के माध्यम से शिक्षा व कला शिल्प के द्वारा सर्वांगीण विकास आदि का प्रयोग अपने भावी जीवन में कर पायेंगे। एक शिक्षक सदैव ही अपने छात्रों के सर्वांगीण विकास की कल्पना करता है, जो नवाचार के प्रयोग से ही संभव हो सकता है। नवाचार के प्रयोग से शिक्षकों में आत्मविश्वास व आत्मसम्मान की भावना जागृत होगी और वे आत्मनिर्भर बनते हैं। इस शोध के अनुसार शिक्षक-शिक्षा की वर्तमान एवं भविष्य परिस्थिति को ध्यान में रखकर सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, नैतिक, अनुसंधान, आई0सी0टी, वैज्ञानिक तथा शैक्षिक दृष्टिकोण से नवाचार की महत्ता स्वीकार करना होगा।

अतः हम कह सकते है कि नवाचार एक तरह का वह नया विचार अथवा व्यवहार है जो शिक्षा को रूचिकर, सरल, रचनात्मक, उपयोगी व्यवहारिक, क्रियात्मक एवं प्रासंगिक बनाता है और छात्रों तथा शिक्षकों का बहुमुखी और सर्वांगीण विकास करता है। आज के युग में नवाचार शिक्षा के उत्थान हेतु शैक्षिक मानकों को बढावा देने के लिए एक आकर्षक एवं शक्तिशाली माध्यम है। अतः हम कह सकते है कि यदि शिक्षण शिक्षा को मजबूत बनाना है तो शिक्षको को नवीन ज्ञान, शिक्षण कौशलो में दक्षता, नये-नये तकनीकी अनुसंधान का ज्ञान व नवाचार के ज्ञान एवं इनके व्यवहारिक प्रयोग में पारंगत होना अति आवश्यक है। कक्षा में नवाचार के प्रयोग से शिक्षक अपने सभी छात्रों को शारीरिक व मानसिक रूप से मजबूत बनायेगें, जिससे सभी छात्रों का सर्वांगीण विकास हो सकेगा।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची


- एमएचआरडी (1985), शिक्षक और समाज, चट्टोपाध्याय समिति की रिपोर्ट (1983-95), एमएचआरडी, भारत सरकार, नई दिल्ली।
- एनसीईआरटी (2006), पाठ्यचर्या नवीनीकरण के लिए शिक्षक शिक्षा पर राष्ट्रीय फोकस समूह, एनसीईआरटी,नई दिल्ली।
- मिशेल, जे.एम. (2003). इमर्जिंग फ्यूचर्सः इनोवेशन इन टीचिंग एण्ड लर्निंग वी.ई.टी.ए.एन.टी. ए. मेलबर्न ।
- एमएचआरडी (1986), शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति, एमएचआरडी, भारत सरकार। नयी दिल्ली। 4 एनसीईआरटी (2005)। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा। एनसीईआरटी। नई दिल्ली।
- भाई योगेन्द्रजीत (2014-15) शिक्षा में नवाचार एवं नवीन प्रवृत्तियाँ
- पटेल, माधव (2018) शिक्षा में नवाचारः भारत के शिक्षक
- शिक्षक शिक्षा में अभिनव अभ्यास, डॉ. सरोज अग्रवाल, रिसर्च पोडिया, वॉल्यूम। (3) संख्या 1 आईएसएसएन 2347-9000
- कुमार, डॉ. अमित (2015) भारतीय शिक्षक शिक्षा में अभिनव दृष्टिकोण, वॉल्यूम. (5) आई0एस0एस0एन-2277-1255
- www.srsshodhsansthan.org
- https://in.ilearnlot.com/2018/08/types-of-innovation.html
- http://echetana.com/wp-content/uploads/2019/10/11-A-H-Neha-Sharma.pdf
- http://www.socialresearchfoundation.com/new/publish-journal.php?editID=1044